

राजस्थान उच्च न्यायालय जयपुर पीठ, जयपुर
आदेश

एकलपीठ दण्डिक विविध जमानत प्रार्थना पत्र संख्या- ७२५६/२००६
राधेश्याम बनाम राजस्थान राज्य

दिनांक: १७.११.२००६

माननीय न्यायाधिपति श्री जितेन्द्र राय गोयल

डॉ. महेश शर्मा, अधिवक्ता अभियुक्त-प्रार्थी की ओर से
श्री आर पी कुलदीप, विद्वान लोक अभियोजक वास्ते राज्य
श्री सुरेन्द्र सिंह, अधिवक्ता, परिवादिया की ओर से

--

अभियुक्त- प्रार्थी द्वारा यह अग्रिम जमानत का प्रार्थना पत्र प्रथम सूचना संख्या- २०२/२००६ पुलिस थाना- सदर, बारां अपराध अन्तर्गत धारा- ४९८-ए, ४०६ भा.दं.सं.के संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है।

इस पर पक्षकारों के विद्वान अधिवक्तागण की बहस सुनी गयी तथा दौरान बहस प्रस्तुत दस्तावेज का अवलोकन किया गया।

विद्वान अधिवक्ता अभियुक्त-प्रार्थी की ओर से जाहिर किया गया है कि मामूली आपसी मन-मुटाव के कारण यह प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज करवा दी गयी है। उनका यह भी तर्क है, जिसका परिवादिया के विद्वान अधिवक्ता ने भी खण्डन नहीं किया है, कि इस वैवाहिक विवाद में पक्षकारों के मध्य राजीनामा हो गया है तथा परिवादिया बन्टी बाई अपने पति राम प्रसाद के साथ रह रही है तथा अब उनके मध्य कोई विवाद नहीं है।

विद्वान अधिवक्ता परिवादिया को इस अग्रिम जमानत के प्रार्थना पत्र को स्वीकार किये जाने में कोई आपत्ति नहीं है तथा यह भी कथन किया कि राजीनामों के आधार पर ही परिवादिया बन्टी बाई के पति राम प्रसाद की जमानत ए सी जे एम, बारां द्वारा ले ली गयी है।

हमने उभय पक्ष के तर्कों एवं दौरान बहस प्रस्तुत समग्र प्रलेखीय सामग्री पर विचार किया।

इस प्रक्रम पर इस मामले के गुणावगुण पर विशेष विवेचन किया जाना उपयुक्त नहीं है किन्तु अपराध की प्रकृति व अभियुक्त की इस अपराध में बतायी गयी लिप्तता, उभय पक्ष के तर्कों व प्रकरण के समस्त तथ्यों एवं परिस्थितियों को देखते हुए मेरी राय में प्रार्थी को धारा ४३८ दण्ड प्रक्रिया संहिता का लाभ दिया जाकर अग्रिम जमानत पर रिहा किया जाना न्यायोचित प्रतीत होता है।

अतः अभियुक्त- प्रार्थी का अग्रिम जमानत का प्रार्थना पत्र स्वीकार किया जाकर आदेश दिया जाता है कि यदि प्रार्थी राधेश्याम पुत्र गुलाब चन्द निवासी- सुभाष नगर, कुन्हाड़ी, कोटा को पुलिस थाना- बारां सदर में दर्ज प्रथम सूचना रिपोर्ट संख्या- २०२/२००६ में गिरफ्तार किया जावे तो उसे अन्वेषण अधिकारी/ गिरफ्तारी अधिकारी/ एस.एच.ओ. की सन्तुष्टि पर प्रार्थी द्वारा रुपये १०,०००/- (दस हजार रुपये मात्र) का स्वयं का व्यक्तिगत बन्ध पत्र व रुपये ५,०००/- -- ५,०००/- (पांच-पांच हजार रुपये मात्र) की दो प्रतिभूति पत्र प्रस्तुत करने पर उसे निम्न शर्तों के साथ जमानत पर रिहा कर दिया जावे:

१. यह कि प्रार्थी पुलिस अधिकारी द्वारा पूछे जाने वाले परिप्रश्नों के उत्तर देने के लिए जैसे और जब अपेक्षित हो, उपलब्ध होगा।
२. यह कि प्रार्थी इस मामले के तथ्यों से अवगत किसी व्यक्ति को न्यायालय या किसी पुलिस अधिकारी के समक्ष ऐसे तथ्यों को प्रकट न करने के लिए मनाने के वास्ते प्रत्यक्षतः या अप्रत्यक्षतः उसे कोई उत्प्रेरणा, धमकी या वचन नहीं देगा।
३. यह कि प्रार्थी न्यायालय की पूर्व अनुज्ञा के बिना भारत नहीं छोड़ेगा।
४. यह कि प्रार्थी भविष्य में इस तरह की प्रकृति के अपराध में लिप्त नहीं होगा।

(न्या० जितेन्द्र राय गोयल)